प्यासे कौए की कहानी

www.thestorybook.in

एक बार की बात है, गर्मी का मौसम था। चारों तरफ़ धूप ही धूप थी। तालाब और नदियाँ सब सूख चुकी थीं। एक कौआ बहुत प्यासा था। वह पानी की तलाश में यहाँ-वहाँ उड़ रहा था।

कौआ बहुत थक गया और बोला, “हे भगवान! अगर मुझे पानी नहीं मिला तो मैं मर जाऊँगा।”

उसी समय उसे एक घड़ा दिखाई दिया। कौआ खुश होकर बोला – “काँव-काँव! शायद इसमें पानी हो।”

वह जल्दी से नीचे उतरा और घड़े में झाँका। सचमुच उसमें पानी था। लेकिन पानी बहुत नीचे था और घड़े का मुँह बहुत छोटा था। कौए की चोंच पानी तक नहीं पहुँच पाई।

कौए ने घड़े को गिराने की कोशिश की, लेकिन घड़ा बहुत भारी था। तब कौआ सोचने लगा कि अब क्या किया जाए।

तभी उसकी नज़र पास पड़ी हुई छोटी-छोटी कंकड़ पर गई।

कौए के मन में एक उपाय आया। उसने एक-एक करके कंकड़ उठाकर घड़े में डालना शुरू किया।

धीरे-धीरे पानी ऊपर आने लगा। कुछ देर बाद पानी घड़े के मुँह तक आ गया।

कौए ने खुशी-खुशी पानी पिया और उड़ गया।

कहानी की सीख (Moral of the Story):
“जहाँ चाह, वहाँ राह।”

यह कहानी हमें सिखाती है कि –

- मुश्किल समय में धैर्य रखना चाहिए।
- बुद्धि और मेहनत से हर समस्या का हल निकल सकता है।
- कभी हार नहीं माननी चाहिए।

ऐसी और भी नैतिक कहानियों के लिए हमारी वेबसाइट www.thestorybook.in पर विज़िट करें।